संतुष्ट आत्मा

लेखकः आयतुल्लाहिल उज़्मा सय्यदुल उलमा मौलाना अली नक़ी नक़वी

संतोष की विशेषता के विपरीत असंतोष है असंतोष दिमाग़ में भी होता है और दिल में भी और इन दोनों के नतीजे में फिर अमल में भी।

दिमाग़ की बेचैनी यह है कि इंसान की राय डांवाँडोल हो कभी कुछ सोचे और कभी कुछ और दिल की बेचैनी यह है कि सही फ़ैसले तक पंहुच जाने के बाद उसकी हिम्मत हिचकोले खा रही है, कभी उसे जोश आता हो और कभी अंजाम के डर से उसकी हिम्मत पस्त होने लगती हो।

और इन सबके नतीजे में अमल में जो बेचैनी होती है उसमें शामिल है अमल में उतावलापन, घबराहट की बातें, कथनी और करनी में परस्पर विरोध और अमल में अनिश्चितता आदि की निशानियाँ।

बेचैनी के जितने पहलू हैं उनके विपरीत इत्मीनान के पहलू हैं। विचार में स्थिरता फिर इरादे में स्थिरता, कार्य में ठहराव और हर कार्य को सही समय पर बिना किसी जल्द बाज़ी के पूरा करना और खतरों की सख़्ती से कदमों का न डगमगाना।

असल में धैर्य, स्थिरता और कदम में ठहराव सब इसी संतुष्ट आत्मा के विभिन्न रूप हैं।

अब संतोष और असंतोष के इन पहलुओं के लिहाज़ से जब हम कर्बला के मुजाहिद हज़रत इमाम हुसैन[अ0] के चरित्र पर शुरू से आखिर तक नज़र डालते हैं तो उसमें संतोष का हर रूख़ इतना पूर्ण नज़र आता है कि ''संतुष्ट आत्मा'' का शब्द जैसे इसी चरित्र पर पूरा उतरता है।

आइये इनमें से एक–एक पहलू को लें और इसके एतबार से शहीदों के सरदार (सय्यदुश्शोहदा[अ0]) की सीरत का अध्ययन करें।

दिमाग़ का संतोष यानि अपनी राय पर जमे रहना और याद रखना चाहिए कि इस जगह पर जब राय के शब्द का प्रयोग करते हैं तो आम लोगों की ज़बान में उन अक़ायद और मुसल्लमात से परे होकर जिन पर निश्चित दलीलों की बुनियाद पर हज़रत इमाम हुसैन अ0 की मन्सबी हैसियत से हमारा विश्वास है, मगर एक उच्च स्तर के व्यक्ति की हैसियत से प्रत्येक धर्म और समाज के व्यक्ति से जब हज़रत इमाम हुसैन अ0 का परिचय कराना हो तो उस समय ''राय'' ही का शब्द इस्तेमाल करना पड़ता है।

राय की स्थिरता प्रकट के समय से होती है? जब से वह हालात पैदा हुए जो धीरे–धीरे इतिहास की गति को कर्बला की घटना तक लाये। वह हज़रत इमाम हसन अ0 की सुलह और ख़ास शर्तों के अधीन आपका ज़ाहरी हुकूमत से अलग होना और शाम के शासक के क़ब्ज़े का तमाम इस्लामिक देशों पर मय इराक़ व हिजाज के स्थापित हो जाना है।

मालूम है कि इमाम हसन[अ0] की फ़ौज के अधिकतर लोग इस सुलह से सहमत न थे। और जैसे रसूले खुदा[स0] की सुलह पर जो आपने हुदैबिया में मुश्रिकों के साथ फ़रमाई थी, बहुत से नामनिहाद मुसलमान नाराज़ थे। उसी प्रकार

उस सुलह से जो इमाम हसन[अ०] ने शाम के शासक (अमीर मुआविया) के साथ फ़रमायी थी, बहुत से नामनिहाद शिया नाराज़ थे और एक वर्ग में यह प्रोपेगण्डा भी था कि छोटे भाई की इस सुलह से सहमति नहीं रखते, इस मौके़ पर तबरी से भी अधिक प्राचीन इतिहासकार अबूहनीफ़ा दीनवरी की किताब ''अल–अख़बारूत्तेवाल'' की यह रवायत बड़ी अहमियत रखती है कि इमाम हसन[अ०] की फौज के चन्द अहम सरदार इमाम हुसैन[अ०] के पास आए और कहा कि हज़रत इमाम हसन[अ०] को इस सुलह का जो उन्होंने की है पाबन्द रहने दीजिए और आप हमारा नेतृत्व कीजिए और हम एकदम शाम पर हमला कर दें फिर देखिएगा कि मुआविया को किस प्रकार पराजित करते हैं हज़रत इमाम हुसैन[अ०] ने इसका ऐतिहासिक उत्तर दिया उसका विषय यह है कि अब अमीरे शाम (शाम का शासक) की ज़िन्दगी तक चुपचुाप बैठे रहो उसके बाद फिर मुझसे कुछ कहना।

यह है अमीरे शाम की ज़िन्दगी के अन्त से बीस वर्ष पहले की बात अब अमीरे शाम की ज़िन्दगी का अन्त रजब सन् 60 हि0 में होता है और बस हुसैन[अ०] का वह महान काम जो दस मुहर्रम सन् 61 हि0 को आपके बलिदान पर पूरा हुआ। शुरू हो जाता है तो क्या हज़रत इमाम हुसैन[अ०] के इस जवाब में जो बीस साल पहले दिया गया था, स्पष्ट उस भविष्य की जो इसके बीस साल बाद आने वाला था खबर न थी और क्या यह आपकी डांवाडोल न होने वाली स्थिर राय का ऐसा सबूत नहीं है जिससे इन्कार नहीं किया जा सकता।

फिर जब से अमीरे शाम ने यज़ीद की बैअत के लिए कोशिश शुरू की, आपने जो बैअत से इन्कार फ़रमाया, किसी क्षण भी उसमें कोई हिचकिचाहट नज़र आई? हिचकिचाहट का एक मामूली असर यह हो सकता था कि आप अपने हमदर्दों को जमा करके परामर्श ही लेते कि मुझसे बैअत का मुतालबा हो रहा है, आप लोगों की क्या राय है? तब किसी हद तक यह समझा जा सकता था कि आपको परिस्थितियों की नजाकत के कारण हिचक है मगर कोई कमज़ोर से कमज़ोर रवायत भी ऐसा नहीं बताती।

इस बुनियादी समस्या का क्या ज़िक्र? बैअत से इन्कार के बाद जो कार्य शैली आपने अपनाई है उस में भी आपने लोगों से कभी कोई परामर्श नहीं किया। कुछ लोग सचमुच की या दिखावे की हमदर्दी से खुद ही आ आकर तरह–तरह की राय देते रहे जिन्हें आपने विभिन्न प्रकार के उत्तर देकर टाल दिया और जो कार्य शैली खुद अपनाई उसमें ज़र्रा भर भी परिवर्तन नहीं किया।

इससे दूसरा अंश दिल का इत्मीनान भी ज़ाहिर है अर्थात् जो कार्य शैली निश्चित की तो उससे न किसी दोस्त की दोस्ती से हटे और न किसी दुश्मन की दुश्मनी के दबाव से और परिणाम स्वरूप कार्य में जो स्थिरता एंव संतोष आपसे ज़ाहिर हुआ उसकी कोई मिसाल नहीं मिलती।

दिल की बेचैनी की निशानियों में सबसे पहला दर्जा यह है कि हर काम उतावलेपन से किया जाए।

हज़रत इमाम हुसैन[अ०] पहले दिन से समझे हुए हैं कि मुझे मौत की नदी में तैरना है मगर जो मौत को यक़ीनी तौर से दिल में ठाने हुए हैं वह अक्ल और शरीअत के क़ानून की हिफ़ाज़त के लिए जान के बचाने के तरीके़ भी अपना रहा है। कभी मक्के में पनाह लेकर और कभी हज के मौके पर मक्के को छोड़ कर और कभी कर्बला पंहुचने के बाद सुलह की शर्तें पेश करके और यहां तक कि आशूर के दिन हुज्जत तमाम करने के लिए खुतबे पढ़कर और उस समय की प्रतीक्षा करके जब जंग की शुरूआत उधर से हो।

अमल मे यह ठहराव बिना आत्मा की पूर्ण शान्ति व संतोष के हो ही नहीं सकता।

फिर घबराहट की बातें और बयान में परस्पर विरोध, इसकी कोई बनी उमैया का इतिहासकार भी कभी आपकी और निस्बत न दे सका।

हालांकि जंग की नीति के तहत शरीअत के कानून में भी किसी हद तक वाकेआत को छुपाने की इजाज़त दी गयी है मगर आपने दोस्त और दुश्मन किसी के सामने भी वास्तिविकता पर पर्दा डालने की कभी कोशिश नहीं की यहां तक हज़रत मुस्लिम व हानी की शहादत की खबर जो आपके साथियों से पर्दे में रही थी आपने खुद अपनी एक तहरीर द्वारा सब पर ज़ाहिर कर दी और अपने साथियों को इजाज़त दे दी कि वह आपका साथ छोड़कर चले जायें जिससे आपके साथ का मजमा जो रास्ते में बहुत हो गया था तितर–बितर हो गया और वही थोड़े से लोग रह गये जो मक्के साथ साथ आये थे मगर आप न पहले इससे डरे और न बाद में इस परिणाम के सामने आने पर परेशान हुए बल्कि जैसे और आपने संतोष की सांस ली कि अब मेरे कारनामें में वह झोल नहीं आ सकता जो नाकिस साथियों की वजह से आ सकता था और वही किरदार आशूर की रात तक कायम रहा, जब दुश्मन की ओर से हमला हो जाने के बाद आपने एक रात की मोहलत हासिल करके फिर अपने साथियों को अपना साथ छोड़कर चला जाने की इजाज़त दी। यह और बात है कि अब मजमा ख़ालिस अफ़राद का था इसी लिए उन्होंने इस इजाज़त से फ़ायदा उठाने की कोशिश नहीं की। मगर तबरी की रवायत के अनुसार जब एक व्यक्ति जहाक बिन अब्दुल्ला मशिरिकी ने इस हद तक इजाज़त से फ़ायदा उठाया कि इन्होंने कहा कि मैं आपके साथ उस समय तक रहूंगा जब तक जंग छिड़े और आपकी मदद भी करूंगा मगर फिर इसके बाद जब सिवा जान देने के कोई मन्ज़िल न रहेगी तो मैं अलग हो जाऊंगा, तो आपने प्रसन्न चित्त से इसकी अनुमति दे दी और उन्होंने ऐसा ही किया। आशूर के दिन आपकी नुसरत में जंग भी की और कुछ दुश्मनों को क़त्ल भी किया और फिर वादे के अनुसार आपसे विदा होना चाहा तो आपने ऐसे संकट के समय में भी उनका क्षण भर रोकने का प्रयास नहीं किया। यह चरित्र (किरदार) एक ऐसे ही संतुष्ट आत्मा का हो सकता है जिसका नाम इतिहास की ज़बान में ''हुसैन[अ०]'' के सिवा कोई और नहीं है।

अमल में ''हिचकिचाहट'' राय में हैरत का नतीजा होता है यहां जिस तरह अस्ल मामले में हज़रत इमाम हुसैन[अ०] ने कभी किसी से कोई परामर्श नहीं लिया उसी तरह पूरे कारनामे में कार्य शैली के किसी अंश तक में कोई एक अवसर कभी ऐसा नहीं आया कि आपने दोस्तों और रिश्तेदारों को जमा करके पूछा हो कि मुझे क्या करना चाहिए। यहां तक कि हमला हो जाने के बाद भी आपकी ओर से उपदेश ही उपदेश, आदेश ही आदेश मिलते हैं, और साथियों, दोस्तों और रिश्तेदारों की तरफ से पालन ही पालन। जैसे बहत्तर आदमी सब अंग थे ओर उनमें काम करने वाला दिल एंव दिमाग सिर्फ एक था, जिसका नाम है ''हुसैन[अ०]'' जिसमें क्षण भर भी कोई घबराहट नहीं है ताकि उसे सहारा देने के लिए किसी और दिल व दिमाग़ इरादे व हिम्मत के काम करने की आवश्यकता हो।

कर्बला के ऐसे मुसीबतों के भयानक कोलाहल में रिश्तेदारों और दोस्तों में से हर एक के साथ इमाम हुसैन[अ०] का बर्ताव, हर एक के अधिकारों का ख्याल, हर एक के मरतबे का ख़्याल करते हुए इस्लाम के बराबरी (मसावात) के सिद्वान्त की सुरक्षा ईश्वर के अधिकारों एंव मानवाधिकारों के छोटे–छोटे अंश तक का लिहाज़, शहीदों का क्रम, हर एक के रूखसत और शहादत के समय उसकी प्रतिष्ठा के अनुसार ग़म के असर के ज़ाहिर करने को जो वास्तव में उस शहीद के कद्र व मरतबे के मुताबिक थे फिर आगे कुरबानी पेश करने की तैयारी, यह सब

(बक़िया पेज नं0 7 पर.............)

(पेज नं0 10 का बक़िया..............)
इसी संतुष्ट आत्मा के प्रतीक व लक्षण थे जो आंखों के सामने आ रहे थे ओर अब मकातिल और इतिहास के पन्नों पर हमारे समक्ष हैं।

यही संतुष्ट आत्मा है जिसे दुश्मन तक की निगाह ने महसूस किया, उस समय जब आप ज़ख़्मों से चूर, बहत्तर दाग़ दिल पर और अनगिनत तीर, नैजे व तलवार के ज़ख्म जिस्म पर खाये हुए जंग के मैदान में शहादत की मंजिल से करीब से करीब तर हो रहे थे तो दुश्मन ने उस समय भी कोई ऐसी खास खुसूसियत महसूस की जिसकी गवाही तबरी की तारीख में अब तक सुरक्षित है कि मैंने कोई ऐसा इंसान नहीं देखा जो ज़ख़्मों से चूर हो और जिसके अज़ीज़ और दोस्त क़त्ल हो चुके हों और वह हुसैन अ0 से अधिक संतुष्ट नजर आता हो।

यह थे हुसैन अ0 जो बिला शक उस महान संतुरूट आत्मा के धारक थे कि जब इन तमाम मुश्किलों और मुसीबतों के कठिन रास्तों को तय करते हुए अपने पैदा करने वाले की बारगाह के सामने पंहुचे तो खुद खुदा स्वागत के तौर पर आवाज़ दे कि ''ऐ संतुरूट आत्मा (नफ्सू मुतमइन्ना) अपने पालने वाले की ओर पलट आ ऐसी हालत में कि मैं तुझसे राज़ी और तू मुझसे राज़ी हो जा अतएव तू मेरे खास बन्दों में शामिल हो जा और मेरी जन्नत में दाखिल हो जा।''

जो सूरये फज्र की आखिरी आयत है और इसी लिए यह सूरा हुसैन के सूरे के लकब से मशहूर है।

